अभिभावकों को बिना देर किए मदद लेना चाहिए

सेरब्रल पॉल्ज़ी वाले बच्चे का पालन

नीता एवं नितिन नायक

निर्मित का जन्म 12 जुलाई, 2011 में भोपाल में हुआ था। जन्म के वक्त उसका वज़न 1.4 किलोग्राम ही था। उस वक्त हम यह जानकर बहुत डर गए थे। पूरा हफ़्ता हमने रात भर जाग-जागकर निकाला। मन में यही डर लगा रहता था कि क्या होगा। डॉक्टर भी सही जवाब नहीं दे पा रहे थे। 20 दिन अस्पताल में रहने के बाद हम निर्मित को घर ले आए। तब हमें यह नहीं पता था कि भविष्य में क्या परेशानी आने वाली है। हम सिर्फ़ उसे कमज़ोर समझते थे। हमने बहुत सारे डॉक्टरों को दिखाया पर कुछ सुधार नहीं हो पा रहा था और वह अभी भी अपनी उम्र के हिसाब से होने वाले विकास से पीछे था। 10 महीने बाद डॉ. टिक्कस से हमारी मुलाक़ात हुई जो हमीदिया अस्पताल,भोपाल के शिशु रोग विशेषज्ञ हैं। उन्होंने हमें बताया कि निर्मित को सेरब्रल पॉल्ज़ी (सीपी) है और उसे कई तरह की थेरेपी की आवश्यकता है। उन्होंने हमें सीआरसी[1] जाने की सलाह दी। तब हमें बेटे के भविष्य की बहुत चिन्ता हुई। फिर हम उसे नियमित रूप से सीआरसी ले जाने लगे जो कि हमारे घर से 15 किलोमीटर दूर था। हम घर में भी वो सभी थेरेपी करने लगे जो सेंटर में थेरेपिस्ट करते थे। पर कुछ ख़ास फ़र्क़ नहीं पड़ा। लगभग तीन साल तक हम उसे सीआरसी में ले जाते रहे। बीच में कुछ पारिवारिक परेशानी भी आई जिसकी वजह से हम निर्मित पर बराबर ध्यान नहीं दे पाए। उसका विकास और धीमा हो गया था। इसी बीच डॉक्टर टिक्कस से डॉ. विकास कदम का पता चला जो प्रोफ़ेशनल थेरेपिस्ट हैं। उनकी थेरेपी से निर्मित को उठने-बैठने और चलने में मदद मिली।

हमने डॉक्टर विकास से थेरेपी करवाना जारी रखा। जब निर्मित साढ़े तीन साल का हुआ तो हमने उसे प्ले स्कूल में भर्ती करवाने के बारे में सोचा। कुछ स्कूल वालों ने उसे एडमिशन देने से मना कर दिया। काफ़ी सारे स्कूलों में घूमने के बाद अन्ततः निर्मित का एडमिशन द *लर्निंग ट्री* में हो गया। उस स्कूल के शिक्षकों ने निर्मित की बहुत मदद की। वहाँ उसने दूसरे बच्चों के साथ रहना सीखा। पर हमारी परेशानी यहाँ ख़त्म नहीं हुई। निर्मित थोड़ा-थोड़ा चलने लगा था, परन्तु वह पढ़-लिख नहीं पा रहा था। तब हमने महसूस किया कि उसे विशेष शिक्षा की ज़रूरत है। कई लोगों से चर्चा की, तो एक परिचित ने भोपाल की *आरुषि* संस्था के बारे में बताया जहाँ विकलांग बच्चों को थेरेपी, विशेष शिक्षा व अन्य विधियों के माध्यम से प्रशिक्षित किया जाता है। तब हम निर्मित को लेकर *आरुषि* गए। उन्होंने बहुत अच्छे-से हमारी बात समझी और निर्मित की विशेष शिक्षा शुरू हो गई। धीरे-धीरे उसकी स्थिति में बदलाव आना शुरू हुए। वह चीज़ों को समझने और पहचानने लगा। निर्मित को लेकर हमारा आत्मविश्वास भी और बढ़ गया।

आरुषि की विशेष शिक्षक रमा मैडम निर्मित को पढ़ाने लगीं। उन्हीं की मेहनत से निर्मित थोड़ा लिखना और पढ़ना सीख गया है। बीच में आर्थिक समस्या की वजह से निर्मित को *आरुषि* में भेजना मुश्किल हो रहा था। पर रमा मैडम, सपना मैडम और *आरुषि* के कुछ और लोगों की मदद से निर्मित फिर से वहाँ जाने लगा। फिर निर्मित का एडमिशन केन्द्रीय विद्यालय में हुआ, जहाँ वह सामान्य बच्चों के साथ रहता है, पढ़ता है। लेकिन वहाँ उसे कुछ परेशानियों का सामना भी करना पड़ता है। वहाँ के सामान्य बच्चे उससे दूरी बनाकर रखते हैं। कई बार उसे अपने पास नहीं बिठाते। लेकिन इन सब परेशानियों के बाद भी कुछ अच्छी चीज़ें हैं—कई बच्चे प्रार्थना के लिए जाने या वॉशरूम ले जाने में निर्मित की मदद करते हैं। उसके होमवर्क के बारे में उसे बताते हैं और उसका क्लासवर्क उसकी कॉपी में कर देते हैं। यही सब बातें हैं जिसकी वजह से निर्मित बिना डरे स्कूल चला जाता है।

आरुषि में जाने से ही निर्मित में यह आत्मविश्वास आया है कि वह सामान्य बच्चों के साथ रहना सीख गया है। अब वह *आरुषि* के बच्चों के साथ नाटकों में भी आत्मविश्वास के साथ अभिनय करने लगा है। इसके लिए हम *आरुषि* संस्थान एवं वहाँ के शिक्षकों के आभारी हैं।

निर्मित की शिक्षा और थेरेपी के कारण हमारी पूरी दिनचर्या ही बदल गई है। सुबह जल्दी उठकर उसे स्कूल छोड़ना। फिर

सुबह 11 बजे स्कूल से आरुषि ले जाना। वहाँ से दोपहर 1 बजे वापिस घर लाना। फिर शाम को 5 बजे थेरेपी के लिए जाना। वहाँ से आकर होमवर्क कराना। सुबह-दोपहर और रात को उसकी ख़ुराक का बराबर ध्यान रखना। उसके साथ खेलने के लिए समय निकालना। उसकी यह सारी ज़रूरतें हम दोनों पति-पत्नी मिल-जुलकर पूर्ण करते हैं।

हम विकलांग बच्चों के अभिभावकों से एक ही बात कहना चाहेंगे कि वह इन बच्चों के भविष्य की ज़्यादा चिन्ता ना करते हुए, इनके वर्तमान पर ध्यान केन्द्रित करें और हँसते-खेलते हुए इन बच्चों के साथ ज़्यादा से ज़्यादा समय बिताएँ। बच्चों को उनकी कमज़ोरियों का एहसास न कराते हुए आगे बढ़ने की प्रेरणा देते रहें। हमें सबसे बड़ी तक़लीफ़ इस बात की है कि निर्मित की बीमारी एवं इलाज के बारे में सही वक्त पर पता नहीं चल पाया। इस वजह से उसका इलाज देर से शुरू हो पाया। इसलिए हम डॉक्टर, अभिभावक, शिक्षक, थेरेपिस्ट आदि से यह कहना चाहेंगे कि वो सेरब्रल पॉल्ज़ी वाले बच्चों के अभिभावकों को इस बीमारी के बारे में पूर्ण जानकारी दें— जैसे कि इलाज के लिए क्या-क्या और कैसे करना चाहिए, कहाँ-कहाँ इलाज हो सकता है। बच्चे के बड़े होने पर विकलांगता में वृद्धि या इसके प्रभावों के बारे में भी उन्हें जागरूक करना चाहिए। यह हमें अपने बच्चों की मदद के लिए आवश्यक क़दम उठाने के लिए तैयार करेगा।

आरुषि संस्थान को दिल से शुक्रिया, जिसने इन बच्चों को एक नई दुनिया दी है। *आरुषि* में ये बच्चे विभिन्न गतिविधियों और कार्यों को बहुत ही मन लगाकर, आनन्दपूर्वक करते हैं।



[i] भारत सरकार के सामाजिक न्याय और अधिकारिता मन्त्रालय ने विकलांग व्यक्तियों के लिए देश भर में कई समग्र क्षेत्रीय केन्द्र (composite regional center) स्थापित किए हैं। ये केन्द्र श्रीनगर (जम्मू-कश्मीर), सुन्दर नगर (हिमाचल प्रदेश), लखनऊ (उत्तर प्रदेश), भोपाल (मध्य प्रदेश), गोहाटी (आसाम), पटना (बिहार), अहमदाबाद (गुजरात) एवं कोझीकोड (केरल) तथा कई अन्य जगहों पर हैं। इनका काम है— विकलांग व्यक्तियों के पुनर्वास के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, रोज़गार और व्यावसायिक प्रशिक्षण, अनुसंधान व जनशक्ति विकास जैसे पहलुओं पर निवारक और प्रचारक, दोनों तरह की सेवाएँ प्रदान करना।



नीता एवं नितिन नायक
निर्मित नायक के माता-पिता